समय

रामनाथ सिंह,
सन्देशवाहक, राजसं रूड़की

जिन्दगी भर एक मौसम नहीं रहता
हर समय खुशी या गम नहीं रहता।

वक्त की आंधी उड़ा देती है रंग सारे
था कोई ख्वाब वो कायम नहीं रहता।

कुछ भी पाने को कुछ भी खो जाता है
तुमको खोने का भी अब डर नहीं रहता।

देश को अब क्या हो गया है हे रब
हर तरफ खतरा है और खतरे का डर है रहता।

जिनकी धड़कन थी अब नजदीक मेरे
वो भी देखो अब हमदम नहीं रहता।

शाम होते ही इतना थक जाते हैं
अब खुद को खुद से मिलने का भी दम नहीं रहता।

देख लो इतिहास एक दिन लोग ढलते हैं
खुद को जो कहता था मैं,हम वो हम नहीं रहता।

जिन्दगी भर एक सा मौसम नहीं रहता
हर समय खुशी या गम नहीं रहता।

*****

मनुष्य को अपने कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है, चाहे आज, चाहे कल, कर्मफल से मुक्ति सम्भव नहीं।

-रामकृष्ण परमहंस